Summary

शोध-प्रबन्ध की रूपरेखा : :

किस रूप में प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध ज्ञान के सामान्य संवर्धन में सहायक सिध्द होता है:-

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध का विषाय है - ' महाकवि निराला ' - दर्शन और कला ' . वस्तुत: आधुनिक काल के प्रमुख कवि एवं साहित्यिकों में विशेषा रूप से निरालाजी का व्यक्तित्व विवादात्मक - व्याख्या, तथा कृतित्व व्याख्यात्मक - विवाद का विषाय बने हुए है. निरालाजी का व्यक्तित्व इतना वैशिष्ट्यपूर्ण तथा कृतित्व इतना व्यापक है कि एक शोध-प्रबन्ध में उनका सर्वांगीण अध्ययन तथा विवेचन करना प्राय: असम्भव है. अत: महाकवि निराला के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के दार्शनिक तथा कलाकार पक्षों को ही शोध एवं अध्ययन का विषाय बनाया गया है क्यों कि यही महाकवि के प्रमुख तत्व है.

निरालाजी दार्शनिक कवि है. परन्तु इनकी दार्शनिक मान्यताओं के विषाय में न मतैक्य मिलता है, और न कोई स्पष्ट,प्रमाणभूत, और सर्वांगीण स्पष्टीकरण तथा विवेचन ही उपलब्ध है. इसी प्रकार से निरालाजी की काव्य - कला विषायक मान्यताएं भी विशेषा अध्ययन तथा अनुशीलन की अपेक्षा रखती हैं. साथ ही उनकी काव्य - कला या काव्य-सौन्दर्य का भी विशेषा,

गहन तथा सर्वांगीण विचार और विवेचन अपेक्षित है. अतएव प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में उक्त दृष्टियों को लक्ष्य में रखकर निरालाजी के काव्य का अध्ययन किया गया है. यहां 'काव्य' का तात्पर्य 'पद्य - साहित्य' गद्य नहीं.

यह शोध-प्रबन्ध मुख्य रूप से व्याख्या प्रधान है. इसका कारण यह है कि निरालाजी की प्राय: सभी काव्य-रचनाएं प्रकाशित हैं. अत: अप्रकाशित रचनाओं को खोज कर प्रामाणिक सामग्री के संकलन तथा उसके अध्ययनपूर्ण निरूपण का प्रश्न ही नहीं उठता. इसके अतिरिक्त निरालाजी के व्यक्तित्व का अध्ययन प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में गौण रूप से सहायक हुआ है. अत: उनके जीवन से सम्बन्धित उतनी ही सामग्री संकलित की गई है जितनी मनोवैज्ञानिक दृष्टि से उनके महाव्यक्तित्व को स्पष्ट करने के लिए अपेक्षित थी, तथा उनके दार्शनिक कवि-रूप को समझाने में सहायक थी. आशय यह है कि इस शोध-प्रबन्ध में निरालाजी के व्यक्तित्व और काव्य सम्बन्धी नवीन तथ्यों को उपयोगिता की दृष्टि से खोजने का प्रयास अवश्य है, परंतु उपलब्धी या सिध्दि की दृष्टि से विशेष आग्रह नहीं है.

छायावाद के अन्य मुख्य कवियों ने कम या अधिक मात्रा में दर्शन के प्रति अपनी रूचि का प्रमाण दिया है, परंतु निरालाजी के काव्य का तो मेरुदण्ड ही दर्शन है. अत: हिन्दी के दार्शनिक कवियों की परम्परा में निराला के विशिष्ट स्थान का निर्देश करते हुए उनके दार्शनिक कवि-व्यक्तित्व का उद्घाटन किया गया है. निरालाजी ने अपनी ओर से किसी स्वतन्त्र दर्शन का प्रतिपादन नहीं किया है. वे वेदान्त के गंभीर चिन्तक थे. अत: वेदान्त तथा अन्य दर्शनों पर किये गये चिन्तन-मनन के फल स्वरूप उनके काव्य में प्रतिफलित विविध दार्शनिक मान्यताओं की व्याख्या मात्र प्रस्तुत की गई है. इस कार्य के लिए उनका गद्य - साहित्य भी विशेष रूप से सहायक हुआ है, अत: उसका उपयोग भी

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध में किया गया है.

निरालाजी मूलत: और संपूर्णत: कवि थे. दार्शनिकता उनके कवि-व्यक्तित्व का विशिष्ट गुणमात्र था.. अतएव उनके काव्य का विशुध्द काव्य-कला की दृष्टि से अध्ययन एवं विवेचन करने का प्रयास किया गया है. निरालाजी हिन्दी के आधुनिक कवि थे. अत: उनके काव्य का अध्ययन तथा समीक्षण, संस्कृत के अथवा अंग्रेजी के परम्परागत काव्यशास्त्रीय सिध्दान्तों के आधार पर करना अनुपयुक्त था, क्योंकि ये सिध्दान्त संस्कृत या अंग्रेजी काव्य को लक्ष्य में रखकर निर्धारित किये गये हैं. परन्तु हिन्दी काव्य को और विशेषत: आधुनिक हिन्दी काव्य को आत्मसात करता हुआ हिन्दी का कोई काव्यशास्त्र न होने के कारण निरालाजी के काव्य का शास्त्रीय अध्ययन करने के हेतु आधुनिक हिन्दी काव्य की प्रकृति के अनुकूल नवीन मानदण्डों की स्थापना करने का प्रयास किया गया है. इस कार्य में पश्चिम के कतिपय आधुनिक समीक्षकोंके विचार विशेषत: रूप से सहायक हुए. काव्य-कला के नवीन मूल्यों की स्थापना करने के कारण निरालाजी क्रांतिकारी कवि सिध्द हुए, अत: इस दृष्टि से भी परम्परागत सिध्दान्तों की अपेक्षा उनके मौलिक दृष्टिकोण का आधार लेना आवश्यक हुआ है.

अत्यन्त भावुक एवं सक्षेत कवि होने के कारण निरालाजी के काव्य में अनुभूतियों के विविध विषय मिलते हैं. परन्तु प्राय: एक ही विषय की बहुरंगी बहुरंगी अनुभूतियों के रूप में उनकी जिस भाव-कला के दर्शन होते हैं, उसे समझाने का प्रयास किया गया है. यद्यपि कुछ विषय ऐसे हैं, जो उनके काव्य में आदि से अन्त तक व्याप्त है. अत: उनके जीवन की पृष्ठभूमि में समस्त काव्य को तीन कालखण्डों में विभाजित करते हुए उक्त विषयों की प्रतिनिधि अनुभूतियों की विकासात्मक - व्याख्या प्रस्तुत की गई है. इसके अतिरिक्त निरालाजी

के काव्य-विकास के विभिन्न सोपान बताते हुए उनके द्वारा व्यंजित भावसौन्दर्य द्वारा निराला की भाव-कला को समझाने का प्रयास किया गया है.

निरालाजी के क्रांतिकारी कवि-व्यक्तित्व का सर्वाधिक परिचय प्राय: उनके छन्द-विधान, भाषा, तथा शैली द्वारा होता है. अत: कला-शिल्प की व्याख्या तथा मानदण्ड प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-शिल्प का समग्र दृष्टि से विवेचन किया गया है.

स्रोत, सहायता, और मौलिकता :-

साहित्यिक-क्षेत्र में निरालाजी की प्राय: उपेक्षा होती रही, अत: उनका विशाल और बहुवस्तुस्पर्शी साहित्य होने पर भी उसका स्वतन्त्र रूपसे वस्तुगत, गहन, और गंभीर अध्ययन तथा विवेचन नहीं हो पाया. परन्तु फिर भी उनके साहित्य का जितना अध्ययन विविध विद्वानों ने किया है, उनका अनुशीलन करते हुए अपनी मान्यताएं, धारणाएं तथा स्थापनाएं प्रस्तुत की गई है. इन विद्वानों में-- डा. रामविलास शर्मा, डा. रामरतन भटनागर, श्री गंगाप्रसाद पाण्डेय, आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री, डा. धनन्जय वर्मा, आदि के नाम उल्लेखनीय है. स्वर्गीय जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानन्दन पंत, महादेवी वर्मा, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, अज्ञेय, डा. प्रभाकर माचवे आदि विद्वानों के लेखों, भूमिकाओं, तथा भाषणों का भी उपयोग किया गया है. इनके अतिरिक्त फ्रेंच तथा अंग्रेजी के विद्वानों के विचार भी प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध को वांछित रूप देने में सहायक सिध्द हुए है.

शोध - यात्रा के अन्तर्गत निरालाजी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व संबंधी सूचना तथा सुझाव प्राप्त करने में श्री सुमित्रानन्दन पंत, श्रीमती महादेवी वर्मा, आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी, डा. रामविलास शर्मा, डा. रामरतन भटनागर, श्री अज्ञेय, डा. प्रभाकर माचवे, श्री रामकृष्ण त्रिपाठी एवं श्री अमृतलाल नागर आदि महानुभावों की प्रत्यक्ष रूप से सहायता ली गई है.

विचार, अनुभूति, तथा अभिव्यक्ति इन तीनों दृष्टियों से निराला-काव्य के दार्शनिक और कला पक्ष का शास्त्रीय तथा गहन अध्ययन प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की प्रमुख मौलिकता है. निरालाजी के महाव्यक्तित्व की विशुध्द मनोवैज्ञानिक व्याख्या, तथा निराला-काव्य का काव्येतर विषयों से असम्पृक्त विशुध्द काव्य - कला के आधार पर वस्तुगत विवेचन इस प्रबन्ध की दूसरी मौलिक विशेषता है. उपर्युक्त अध्ययन तथा विवेचन के आधार पर जो स्थापनाएं की गई है, वे उक्त मौलिकता का प्रतिनिधित्व करती है.

स्थापनाएं :-

१ - निरालाजी महाव्यक्तित्व सम्पन्न कवि है.

२ - निरालाजी दार्शनिक कवि है.

३ - हिन्दी के दार्शनिक कवियों की परम्परा में निरालाजी का विशिष्ट स्थान है.
वे आचार एवं विचार से वेदान्ती थे, और स्वामी विवेकानन्द द्वारा प्रस्तुत वेदान्त की व्याख्या उन्हें स्वीकार्य थी. परन्तु वे शांकर-अद्वैत के एकनिष्ठ समर्थक तथा अनन्य अनुगामी नहीं कहे जा सकते.

४ - एकांगी दृष्टिकोण द्वारा नहीं परन्तु कला की पूर्ण एवं सर्वांगी दृष्टि द्वारा काव्य के अध्ययन एवं विवेचन के निरालाजी समर्थक है.

५ - निरालाजी प्रमुख रूप से भक्ति और प्रपत्ति, प्रेम और प्रकृति, तथा जीवन और जागरण के कवि है. परिमल-काल, कुकुरमुत्ता-काल, तथा अर्चना-काल उनके काव्य-विकास की तीन सीमाएं है, तथा जुही की कली, सरोज-स्मृति, राम की शक्ति पूजा, तुलसीदास, कुकुरमुत्ता, तथा देवी सरस्वती -- रचनाएं उनकी काव्य-कला के विकास के प्रमुख सोपान है. 17

६ - मौलिक बिम्ब-विधान, सूक्ष्म और व्यापक प्रतीक-विधान, तथा भाव एवं विषय के अनुकूल भाषा, छन्द, और शैली के रूप में निरालाजी के काव्य में संश्लिष्ट तथा पूर्ण कला के दर्शन होते है.

महाकवि निराला - दर्शन और कला.

प्रथम अध्याय : : महाकवि निराला-महाव्यक्तित्व (निरालाजी के व्यक्तित्व का विकासात्मक तथा मनोवैज्ञानिक अध्ययन)

१ - प्राक्कथन

२ - व्यक्तित्व और महाव्यक्तित्व की व्याख्या

३ - निरालाजी के व्यक्तित्व का विकास

४ - निराला - महाव्यक्तित्व

५ - निरालाजी का दार्शनिक कवि-रूप

६ - उपसंहार

द्वितीय अध्याय : : महाकवि निराला और दर्शन (हिन्दी की दार्शनिक कविपरम्परा)

१ - प्राक्कथन

२ - ' कवि ' की व्याख्या

३ - कवि-स्वरूप, प्रकार और वर्गीकरण

४ - दार्शनिक कवि, और दार्शनिक कवि के भेद

५ - हिन्दी में दार्शनिक कवियों की परम्परा

६ - छायावाद - युग का दार्शनिक पक्ष, एवं हिंदी की दार्शनिक कवि परम्परा में निराला जी का स्थान

७ - उपसंहार

तृतीय अध्याय :: महाकवि निराला का दर्शन (निराला-काव्य में प्रतिफलित विविध मान्यताओं की दर्शन के आधार पर व्याख्या)

१ - प्राक्कथन

२ - महाकवि निराला के दर्शन का स्वरूपात्मक परिचय

३ - महाकवि निराला की चिन्तन धारा

४ - महाकवि निराला की आस्था के विषाय

५ - समापन

चतुर्थ अध्याय :: महाकवि निराला की काव्य-कला (काव्य-कला-दर्शन)

१ - प्राक्कथन

२ - कला की व्याख्या (सृष्टा या कवि, माध्यम और प्रक्रिया, सहृदय और समीक्षाक की दृष्टि से)

३ - कला के सृजन की प्रक्रिया

४ - कला का स्वरूप

५ - कला का प्रयोजन

६ - निराला जी की काव्य-कला विषायक मान्यताएं

७ - उपसंहार

पंचम अध्याय :: महाकवि निराला की काव्य-कला (भाव-कला)

१ - प्राक्कथन

२ - भाव - कला

३ - निराला काव्य- कला के अध्ययन के मानदण्ड, और उनका सैध्दांतिक विवेचन.

४ - निराला - काव्य का विकास, और काव्यानुभूति के विषय

५ - निराला - काव्य की प्रतिनिधि अनुभूतियाँ - स्वरूप, व्याख्या, और सौंदर्य

६ - निराला - काव्य - विकास के सोपान और भाव - सौंदर्य,

७ - उपसंहार

षष्ठ अध्याय : : महाकवि निराला की काव्यकला (कला-शिल्प)

१ - प्राक्कथन

२ - कला - शिल्प स्वरूप और प्रक्रिया

३ - कला -शिल्प के स्तर --

३-१ पद - शिल्प

३११ वाक्य -शिल्प

३-२ महावाक्य - शिल्प

४ - निराला जी के कला - शिल्प की सोदाहरण व्याख्या

५ - उपसंहार